Chapter- 6

नाम में क्या है ?

STUDY NOTES

MIND MAP

पाठ प्रवेश

इस पाठ में केवल नाम प्रधानता देने वाले लोगों पर व्यंग्य किया गया है। नाम से नहीं ,अपितु काम के द्वारा नाम की महिमा बढ़ जाती है । संसार कर्म प्रधान है ,इसलिए कर्म करना चाहिए । गीत में श्रीकृष्ण ने भी कर्म करने को कहा है । प्रस्तुत पाठ में नाम के महत्व से ज्यादा कर्म की प्रधानता के बारें में चर्चा किया गया है । संसार कर्ममय है । कर्म के बिना जीवन का अस्तित्व असंभव है । नाम केवल पुकारने केलिए होता है । नाम शुभ और अशुभ नहीं होता है । कुछ लोगों के मन में यह बैठ जाता है कि नाम अच्छा नहीं है मतलव उनका सब कुछ बुरा होगा । यह गलत सोच को दिल और दिमाग से निकाल देना चाहिए । लोग अपने कर्म के कारण संसार में जाने जाते है । इसलिए अच्छे नाम पीछे न भाग कर केवल अच्छा कर्म करना चाहिए

पाठ सार

नाम में क्या है? यह एक व्यंग्यात्मक लेख है। इसमें कर्म की प्रधानता पर बल दिया है। कर्म (काम) को महत्त्व देते हुए व्यक्ति के नाम 'पुकारने' की संज्ञा दी है। तक्षशिला के महाविद्यालय में पापक एक

विद्यार्थी को अपना नाम बिलकुल नापसंद था उसके मित्र भी उसे पापी, पापक आदि नामों से संबोधित करते थे इसलिए यह अत्यंत दुखी था। उसने अपने गुरु से अपना नाम बदलने के लिए आग्रह किया इस पर गुरु जो ने उसे सच्चाई से अवगत कराने के लिए स्वयं अपना नाम ढूँढने के लिए कहा। वह कई गाँव घूमा उसने हर जगह वही पाया कि किसी भी व्यक्ति का नाम उसके गुणों के अनुरूप नहीं था। अंत में वह इस नतीजे पर पहुँचा कि नाम तो केवल पुकारने के लिए होता है किंतु व्यक्ति की पहचान उसके काम से होती है। पापक को अब यह बात भली-भाँति समझ में आ गई कि व्यक्ति का नाम भले ही अच्छा हो न हो उसके कर्म अच्छे होने चाहिए अर्थात् व्यक्ति को गुण तथा चरित्र के अनुसार मान-सम्मान मिलता है ।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow